प्राण

चाचा चौधरी और क्रूर ज़ान

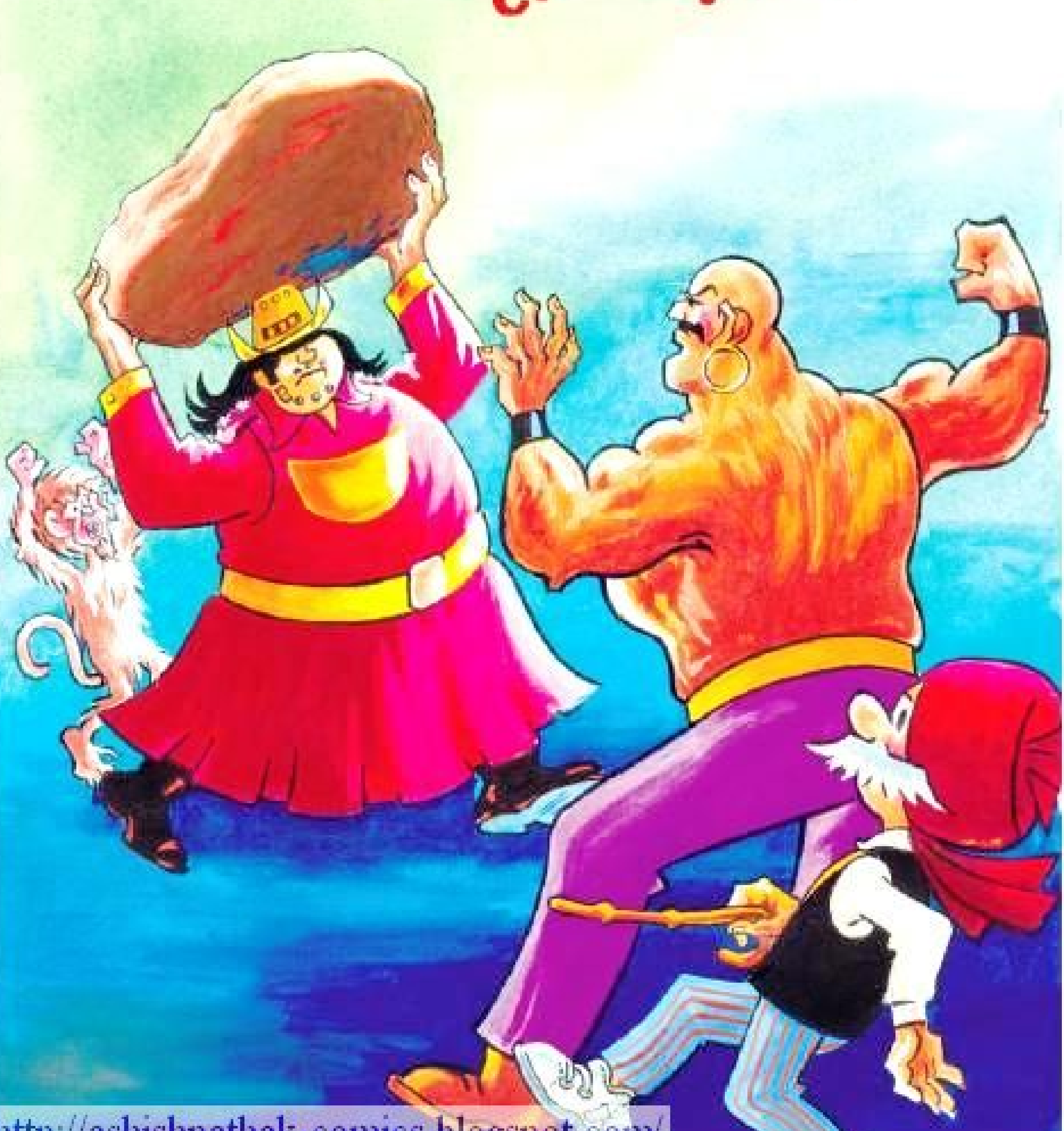

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

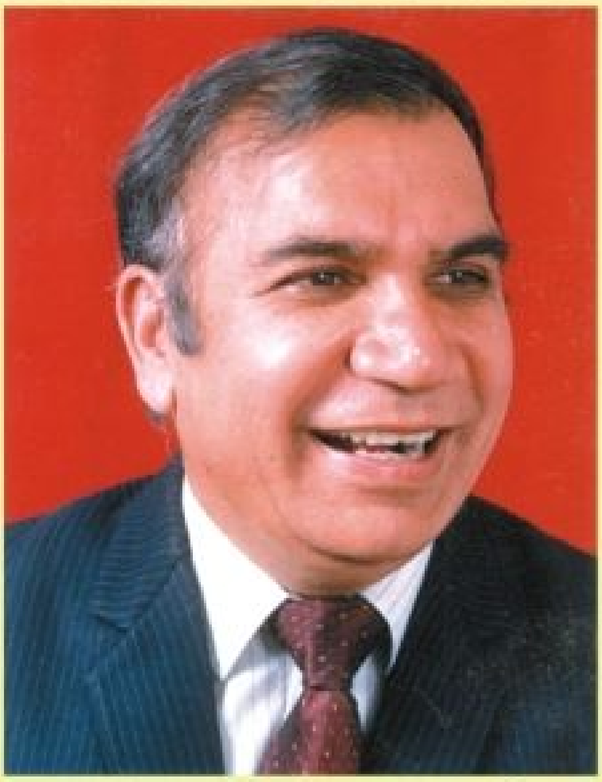

कार्टूनिस्ट प्राण का जन्म कसूर नामक कसबे में, जो अब पाकिस्तान में है, हुआ था। एम.ए. (राजनीति शास्त्र) और फाइन आर्ट्स का अध्ययन करने के बाद उनका कार्टूनिंग कैरियर 1960 में दैनिक मिलाप से शुरू हुआ।

उन दिनों सारे भारत में विदेशी कॉमिक्स छपती थीं। प्राण ने भारतीय पात्रों की रचना करके स्थानीय विषयों पर कॉमिक्स बनाना शुरू किया। उनके प्रमुख चरित्र हैं - चाचा चौधरी, साबू, श्रीमतीजी, पिंकी, बिल्लू और रमन।

लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स ने उनको 1995 में पीपुल ऑफ द ईयर अवार्ड से पुरस्कृत किया। उनकी चाचा चौधरी स्ट्रिप्स को इंटरनेशनल म्युज़ियम ऑफ कार्टून आर्ट, अमरीका में स्थायी रूप से रखा गया है। 1983 में स्वर्गीया प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्राण की राष्ट्रीय एकता पर बनी कॉमिक्स 'रमन-हम एक हैं' का विमोचन किया।

प्राण के चरित्रों की लोकप्रियता का रहस्य है कि वे सीधे सरल हास्य द्वारा पाठकों को भीतर तक गुदगुदा देते हैं।

प्रकाशक

TITLES CHACHA CHAUDHARY AND SABU AND THEIR CHARACTERS ARE COPYRIGHT REGISTERED BY GOVERNMENT OF INDIA FOR THE PROPRIETORS PRAN'S FEATURES, A-84 NARAINA VIHAR, NEW DELHI-110028. REPRODUCTION OF ANY PART OF THIS BOOK IS STRICTLY PROHIBITED. NO ACTUAL PERSON IS NAMED OR DELINEATED IN THIS FICTION COMICS. ANY SIMILARITY TO REAL HUMAN BEING OR PLACE IS PURELY COINCIDENTAL.

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

सबको कुचल दो!
ही! ही!!
हाय य!
ओह ह!
इसे आगे बढ़ाओ ! उधर ज्यादा आबादी दिखाई दे रही है!
ध्वस्त करने का बटन दबाता हूं
गोला निकलता है.

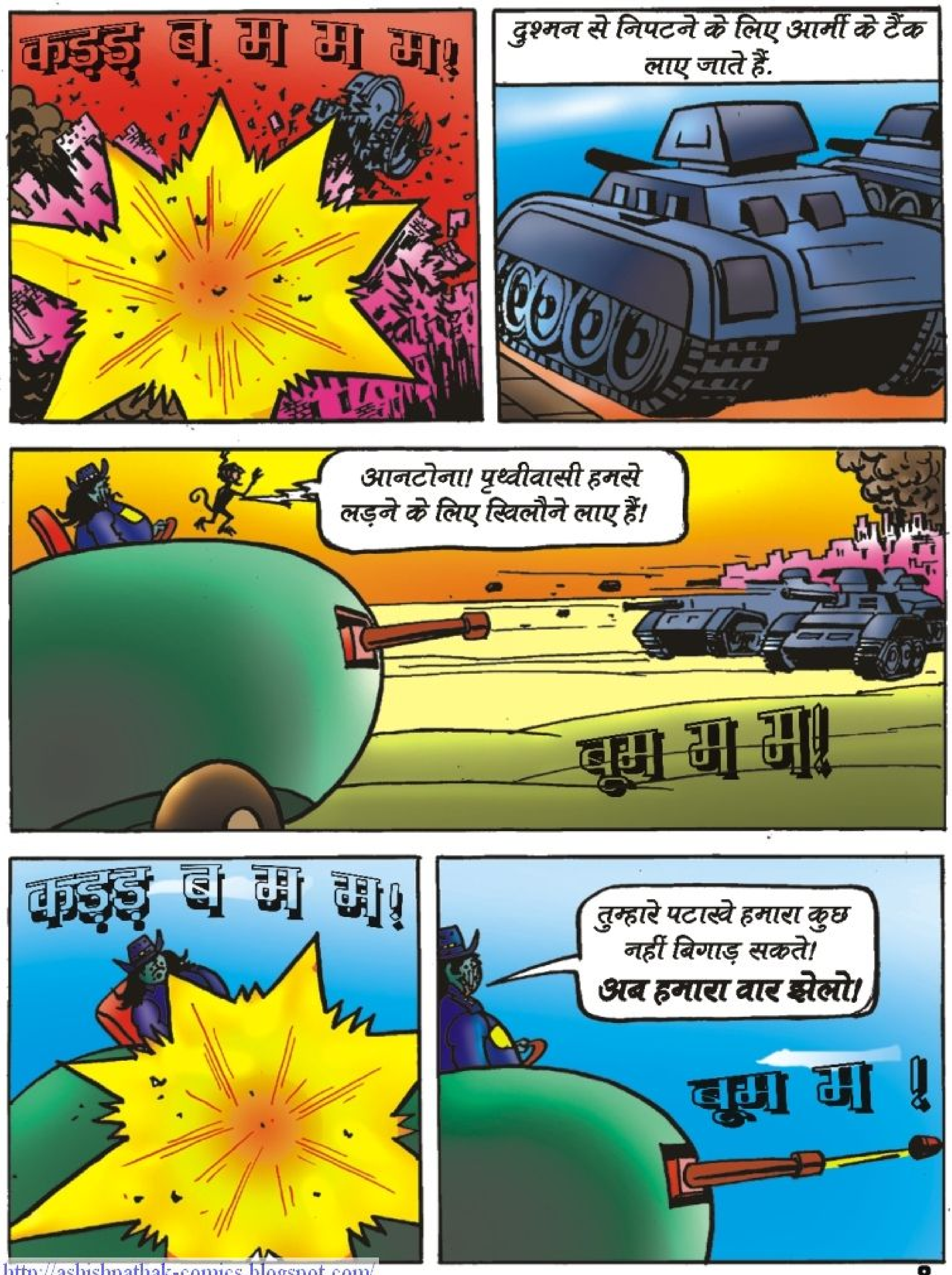

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

रात ट ट ट!
ओह हा! गोलियों की बौछार!
चाचाजी! क्या मेरी जरूरत है?
साबू! तुम न उलझना! मैं उससे निपटूंगा!
अब इसी का भरोसा है!
आऊ ऊ!

यह बंदर कौन है?
यह कोई जीव नहीं है! यह रोबोट था! इसकी कमांड पीछे से आती थी! सारा विनाश इसीके द्वारा हुआ! मैंने इसमें वायरस छोड़कर इसे नाकाम कर दिया है!
तुमने कोमबा को मार डाला! मैं तुम्हें नरक में डाल दूंगा!
धड़ाक
क !
ओह हा!
उसका साथी भी आ गया? साबू उससे निपटेगा!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

बीजी का पर्स
शूगा! अगर हम उस महिला को गिरा दें तो मैं उसका पर्स लेकर रफ्फू चक्कर हो सकता हूं!
ठीक है, फूका! लो, छिल्का तो वैसे भी फैंकना था!
मुझे कुछ शॉपिंग करनी है!
मैं इसके पीछे चलूं ताकि जब यह गिरे, मैं झट से पर्स उठा लूं!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

फूका! तुम्हें शर्म आनी चाहिए, एक औरत से मात खा गए!
शूगा! मेरी कमर टूटी जा रही है और ऊपर से तुम बरस रहे हो? तुम कैसे दोस्त हो?
इस बार मैं उसे चाकू दिखाऊंगा और पर्स छीन लूंगा!
वह जा रही है! गनीमत है कि मोटे लोग धीरे चलते हैं।
औरत! अगर तुम अपनी जान की सलामती चाहती हो तो अपना पर्स मेरे हवाले कर दो!

यह लो!
धड़ाक्क क्क!
आऊ ऊ!
पता नहीं मच्छर काकरोच कहां से आ जाते हैं?
वह फिर तुम्हें चकमा दे गई!
उसने अचानक मुझपर वार कर दिया था!
अब यह रिवाल्वर उससे निपटेगी!

अगर वह पर्स मेरे हवाले नहीं करेगी तो मैं उसे गोली मार दूंगा!
अरर! रूको!
तुम्हारी गन की आवाज सुनकर पुलिस आ जाएगी और तुम पकड़े जाओगे! मेरी गन में सायलेंसर लगा है! आवाज नहीं होगी!
ठीक है! हम इन्हें बदल लेते हैं!
अब इससे उसे मारूंगा!
कहो? तुम अपना पर्स मेरे हवाले करोगी या तुम्हें मारने के बाद मैं उसे ले लूं?
मैं पर्स नहीं दूंगी!
ठीक है, फिर गोली खाओ!..ओह ह, यह फायर क्यों नहीं कर रही?

??
क्योंकि उसमें बुलेट नहीं है। जब गन चलेगी नहीं तो आवाज कहां से होगी?
मैं मुक्का मारकर तुम्हारी नाक तोड़ दूंगा!
तुम जानते हो जो मेरे हाथ में गन है वह गोलियों से भरी है। हैंड्स अप!
तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?
क्योंकि जिसे तुम लूटना चाहते थे वह मेरी पत्नी है।

टोल टैक्स

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो उसको वहीं रहने दो!
साबू! खूनखराबे से क्या फायदा? उसे वहीं रख दो!
हो! हो!! यह जमीन ओबीना की है। इसलिए यहां उसका हुक्म चलता है!
ओबीना दुनिया का सबसे अक्लमंद प्राणी है क्योंकि उसके दो सिर हैं!
अगर अक्ल का यही मापदंड होता तो रावण सर्वश्रेष्ठ होता क्योंकि उसके दस सिर थे। फिर भी एक सिर वाले राम ने लंकानरेश को मात दे दी!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

बस! तुम्हारी बकबक काफी बर्दाश्त कर ली!
मुझे चैलेंज करते हो? यह लो!
धांय य!
जरा दायें का स्वाद चखो!
धड़ाक क!
आऊ ऊ ऊ! मेरी गर्दन!
चाचाजी, ट्रक लेकर निकलो!
डगडग! उसी रफ्तार से बढ़ो जो पहले थी!

लुटेरे
रौला! हमें सूचना मिली है कि ट्रेज़री से फैडरल बैंक में पैसा आया है!
मैडम गजालो! जबतक चाचा चौधरी शहर में है तबतक **फैडरल** तो दूर कोई **पिग्गी बैंक** भी नहीं तोड़ सकता!
उस लाल पगड़ी को हमारा ब्रेन टैंक सम्भाल लेगा!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

अब मैं तुम्हारी धज्जियां उड़ाने जा रहा हूं!
धड़ाक फ़क!
आऊ ऊ!
चौख्वट! भाग!
टैंक! तुम्हारा पानी लीक हो गया!
तुम्हारी हालत बताती है कि तुम नाकामयाब रहे!
हां, मैडम!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

मैंने सुना था तुम हमेशा लाल पगड़ी में रहते हो?
तुम्हारे आदमियो ने गोलियों से उसका जाल बना दिया!
अगर तुमने स्ट्रांग रूम की चाबी नहीं दी तो पगड़ी की तरह गोलियों से तुम्हारा जिस्म छलनी कर दिया जाएगा।
MANAGER
इसका मुझे पता था। इसलिए मैंने उसे लॉक किया ही नहीं!
स्ट्रांगरूम खोलो!
किक्क क!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

चाचा का बैग
टिंडा! उस आदमी के बैग में माल होगा! उसे उठाकर चम्पत हो जाओ!
लीरा! तुम हमेशा मुझे मरवाने की क्यों सोचते हो?
पिछली बार तुमने मुझे एक आदमी की पाकेट मारने को कहा था! वह आदमी प्लेन लिबास में पुलिसमैन निकला! मैं बड़ी मुश्किल से जान बचाकर भागा था!
जानते हो वह कौन है? चाचा चौधरी!
वह कांस्टेबल तो नहीं? फिर उससे क्या डरना?

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

दूध!
लपर! लपर!!
एक से छुटकारा हुआ! अब मैं उसके मालिक से निपटता हूं!
अर र र! बुलेट्स आजकल महंगी हैं! क्यों पैसे बर्बाद करते हो?

मुझे तुम्हारा वह बैग चाहिए!
तो ले लो!
सौदा फायदे का रहा! बिना बुलेट चलाए बैग मिल गया!
क्या तुम बैग खोलकर अंदर रखा माल नहीं देखोगे?
देखता हूं!
धड़ाक!
टिंडा ठीक कहता था ! चाचा चौधरी से आजतक कोई नहीं जीत सका!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

आश्चर्यजनक!
कट ट ट ट!
पलटप्लेट! चलो, मैं तुम्हें दुश्मन दिखाऊं!
साबू! मैं देखना चाहता हूं कि तुम फूंक कितनी जोर की मार सकते हो?
गालों में ज्यादा से ज्यादा हवा भरो!
देखो! वह रहे हमारे दुश्मन!
धमाकासिहं! मैं पहले लम्बू की गर्दन काटूंगा!

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

© PRAN'S FEATURES

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

http://ashishpathak-comics.blogspot.com/

चाचाजी! वह पहलवान हमारी गेंद नहीं देता!
साबू! जाकर बॉल लेकर आओ!
ट्रिन न न!
इस बार मै तुम्हारी हड्डियां तोड़ दूंगा!
तुम कुछ कह रहे थे?
हुजूर, लीजिए बॉल!